पहाड़ चढ़ने वाली मछली महशीर

नरेन्द्र देवांगन

महशीर ही वह मछली है, जो बहते पानी की धारा की उल्टी दिशा में तैर सकती है। आम तौर पर जब बाढ़ आती है, तो वह नदी में ऊंचाई की तरफ चल पड़ती है और जलधारा के सहारे पहाड़ तक पहुंच सकती है।

इसका नाम महशीर क्यों पड़ा? मनु स्मृति में इसका ज़िक्र दो बार आता है। वहां इसे महाशल्क कहा गया है। महाशल्क का अर्थ होता है जिसकी हड्डियों या कांटों का ढांचा बहुत बड़ा हो। माना जाता है कि यही नाम बाद में महशीर हो गया। आज भी बंगाल में इसे 'महासोल' कहा जाता है। जबकि कई लोगों का मानना है कि मुंह बड़ा होने के कारण इसे 'महाआशय' कहा गया और इससे महशीर बना। कुछ और लोग मानते हैं कि पारसी में माह का अर्थ होता है मछली और इस मछली का मुंह शेर जैसा बड़ा है। इसलिए इसे महशीर कहा जाने लगा।

महशीर पूरी तरह से भारत के जल की रानी है। यह भारत के लगभग हर कोने में पाई जाती है। भारतीय उपमहाद्वीप के अलावा यह थोड़ा-बहुत इंडोनेशिया और मलेशिया में पाई जाती है। बाकी दुनिया में यह कहीं नहीं मिलती। महशीर बहते पानी की मछली है। आम तौर पर यह नदियों में ही मिलती है। इसके अलावा यह उन बड़ी झीलों में भी पाई जाती है, जहां ताज़ा पानी लगातार आता रहता है। नदी हो या झील, महशीर ऐसी जगह रहना पसंद करती है, जहां पानी पर्याप्त गहरा हो और उसमें पत्थर और चट्टानें हों, ताकि खतरा आने पर वह उनके पीछे छिपकर अपना बचाव कर सके।

रूप, रंग और आकार में महशीर कई तरह की होती है। बंगाल और हिमाचल की व्यास नदी की महशीर में फर्क होता है। कर्नाटक की कालिंदी नदी में जो महशीर पाई जाती है, वह एकदम ही अलग होती है। रंग के हिसाब से इसकी सबसे मशहूर प्रजातियां हैं सुनहरी महशीर और रुपहली महशीर। एक के शरीर में सोने जैसी आभा होती है, तो दूसरी के शरीर में चांदी जैसी। आम तौर पर महशीर का आकार इस बात पर निर्भर होता है कि वह किस नदी या झील में है। यानी उस नदी या झील का आकार क्या है और उसमें महशीर के लिए कितना खाना मौजूद है? सबसे बड़ी महशीर का वज़न 30-35 किलोग्राम के आसपास होता है। कई शिकारियों ने 70-80 कि.ग्रा. की सुनहरी महशीर का ज़िक्र भी किया है, लेकिन इतनी बड़ी महशीर इन दिनों नहीं दिखाई देती।

ब्रिटिश राज के समय महशीर अंग्रेज़ों की सबसे पसंदीदा मछली बन गई थी। वे इसे भारत की सबसे अच्छी गेम फिश मानते थे। गेम फिश उस मछली को कहा जाता है, जो बहुत आसानी से शिकारी के कांटे में आकर नहीं फंसती। उसे पकड़ने के लिए शिकारी को मछली के तौर-तरीकों को समझना पड़ता है और उसे अपने कांटे में फंसाने के लिए रणनीति बनानी पड़ती है। ऐसी मछली के शिकार में किसी खेल-सा मज़ा आता है। उन्हें महशीर का स्वाद भी सबसे ज़्यादा पसंद था। उन्हें यह बंगाल की इलिश और महाराष्ट्र की बांबे डक से भी ज़्यादा पसंद थी।

भारत में मछली के शिकार पर पहली किताब *रॉड इन इंडिया* हेनरी सुलीवान थॉमस ने लिखी थी, जिसका बहुत बड़ा हिस्सा महशीर के शिकार पर ही था। बाद में एक

अंग्रेज़ शिकारी सेसिल लांग ने खास तौर पर महशीर के शिकार पर ही एक बहुत मोटी किताब लिखी, जिसका नाम था *दी माइटी महशीर*। पूरी किताब में बताया गया है कि भारत में किस-किस जगह कैसी महशीर मिलती है और उसे पकड़ने के लिए क्या करना चाहिए। उसमें तमाम लोगों के महशीर से जुड़े अनुभवों का भी ज़िक्र है।

महशीर आज खतरे में है। इसकी संख्या काफी तेज़ी से कम हो रही है। कई नदियों और झीलों से तो यह पूरी तरह गायब भी हो चुकी है। महशीर के इस तरह से खत्म होते जाने के कई कारण हैं। एक तो इसके स्वाद के कारण इसकी बाज़ार में काफी मांग है। मछलियों का कारोबार करने वाले इन्हें ज़्यादा तादाद में पाने के लिए चोरी-छिपे नदी या झील वगैरह में बारूद लगाकर विस्फोट कर देते हैं। इससे वे एक साथ कई तरह की मछलियां तो पकड़ लेते हैं, लेकिन इससे जो नुकसान होता है वह पकड़ी गई मछलियों की संख्या से कहीं बड़ा होता है। इस विस्फोट में महशीर के बहुत सारे बच्चे और अंडे वगैरह भी नष्ट हो जाते हैं। यानी भविष्य की उम्मीदें खत्म हो जाती हैं।

इसके अलावा कई जगह खनन परियोजनाओं के कारण पानी के साथ भारी मात्रा में कंकड़ और गाद वगैरह आने लगते हैं। ऐसे पानी में महशीर के लिए जीना मुश्किल हो जाता है। इनकी संख्या कम होने का एक बड़ा कारण बड़े बांध भी हैं। महशीर नदी के ऊपरी हिस्सों में बड़े पत्थरों और चट्टानों के पीछे अपने अंडे देती हैं, ताकि उस जगह वे ज़्यादा सुरक्षित रह सकें। लेकिन अगर उस रास्ते में बिजली उत्पादन के लिए बांध बन जाता है, तो वे ऊपर नहीं जा सकतीं। हारकर उन्हें असुरक्षित जगह पर ही अंडे देने पड़ते हैं।

महशीर की संख्या लगातार कम होते जाने की वजह से भारत सरकार ने इसे बचाने के लिए कई अभियान भी चलाए हैं। नैनीताल के पास रामनगर में रामगंगा नदी के पास इसके संरक्षण के लिए एक केंद्र भी बनाया गया है। महशीर का निजी तौर पर होने वाला शिकार अभी भी जारी है। लेकिन इन दिनों जिस तरह का शिकार ज़्यादा हो रहा है, उसे एथिकल एंगलिंग कहते हैं। इसमें मछली को पकड़ा तो जाता है, लेकिन कांटे से निकालकर फिर से पानी में छोड़ दिया जाता है। कांटे की वजह से मछली में जो घाव होता है, वह थोड़े समय में ही भर जाता है।

महशीर को बचाना इसलिए भी ज़रूरी है, क्योंकि यह पूरी तरह से भारत की मछली है। अगर यह भारत में खत्म हो गई, तो फिर यह बस इतिहास ही बनकर रह जाएगी। ***(स्रोत फीचर्स)***